Page:
Date:

Applied Statistics → : व्यावहारिक सांख्यिकी से अभिप्राय किसी क्षेत्र विशेष, किसी तथ्य विशेष अथवा किसी विषय विशेष पर सांख्यिकीय रीतियों का प्रयोग करना है। " किसी विशेष प्रकार की विषय सामग्री में सांख्यिकीय रीतियों का प्रस्तुतीकरण है। जैसे -
जनसंख्या, राष्ट्रीय आय, कृषि उत्पादन मूल्य व मजदूरी सम्बन्धी समंक व्यावहारिक सांख्यिकी के अन्तर्गत रखे जायेंगे।

Descriptive Statistics → : इसके अन्तर्गत किसी क्षेत्र से सम्बन्धित भूतकाल अथवा वर्तमान समंको का अध्ययन किया जाता है। इसमें किसी एक प्रतिनिधि प्राप्तांक के आधार पर सभी के प्राप्तांको का वर्णन करती है इसका उद्देश्य संख्यात्मक तथ्यों का साधारण ढंग से वर्णन करना होता है।

प्रतिनिधि प्राप्तांक = औसत, माध्यिका, बहुलक
$= \bar{X}, M, Z.$
के आधार पर पूरी कक्षा के अंको का वर्णन करना।

Scanned by CamScanner

Page:
Date:

Inferential Statistics → अनुमानित सांख्यिकी

अनुमानित सांख्यिकी → सांख्यिकी के अन्तर्गत कुछ विशेष विषयों से सम्बन्धित नियमों की पुष्टि हेतु संमको का संकलन किया जाता है। इसके अन्तर्गत हम अनुमान लगाते है। अनुमानित सांख्यिकी हमें यह बताती है कि एक प्रतिदर्श के प्राप्तांक के आधार पर हम जनसंख्या (समग्र) को किस हद (सीमा) तक परिभाषित कर सकते है व समग्र की विशेषताओं का अनुमान लगा सकते है। जब हम जनसंख्या पर अध्ययन नही कर सकते है तब प्रतिदर्श अनुसन्धान की सहायता ली जाती है।

ऐसी सांख्यिकी जिसमें हम प्रतिदर्श

संमको का संकलन (Collection of data) →

सांख्यिकीय अनुसन्धान के आयोजन के बाद, अगला कदम संमको का संकलन करना है। संमको का संकलन करते समय अत्यन्त सावधानी, सतर्कता, दृढ़ता, विश्वास

निष्पक्षता, और धैर्य से काम लिया जाना चाहिए ताकि संमको के रूप में एकत्रित कच्ची सामग्री कहीं अशुद्ध व अविश्वसनीय न हो जायें।

प्राथमिक संमक (Primary data)

ये वो संमक होते हैं जिन्हें अनुसन्धानकर्त्ता स्वयं अपने किसी विशिष्ट उद्देश्य से एकत्रित करता है। अर्थात वे संमक, जो किसी सांख्यिकीय अनुसन्धान के लिए, किसी अनुसन्धानकर्त्ता द्वारा मौलिक रूप से पहली बार एकत्रित किये जाते है प्राथमिक संमक कहलाते है।

द्वितीयक संमक (Secondary data) →

द्वितीयक संमक वे है जो पहले से ही अन्य व्यक्तियों या संस्थाओं द्वारा किसी विशेष उद्देश्य के लिए एकत्रित किये जा चुके होते हैं। और अनुसन्धानकर्त्ता केवल उनका प्रयोग करता है।

Scanned by CamScanner

Methods of collecting Primary data.

(1) प्रत्यक्ष व्यक्तिगत अनुसन्धान (Direct Personal investigation) :- इस रीति के अन्तर्गत अनुसन्धान कर्ता स्वयं अनुसन्धान क्षेत्र में जाकर सम्बद्ध लोगों अर्थात् सूचना देने वालों (informants) से प्रत्यक्ष रूप से, व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित करके सूचना प्राप्त करता है

(2) अप्रत्यक्ष मौखिक अनुसन्धान :- (Indirect oral investigation) :- इस रीति के अन्तर्गत समस्या से प्रत्यक्ष रूप से सम्बंध रखने वाले व्यक्तियों से सूचना प्राप्त नहीं कि जाती बल्कि समस्या से अप्रत्यक्ष रूप से सम्बंधित व्यक्तियों से मौखिक पूछताछ करके सूचनाएँ प्राप्त की जाती है जैसे - यदि श्रमिकों के रहन सहन के बारे में जानकारी करनी है तो यह पूछ-ताछ उनसे न करके श्रम संघों या मिल-मालिकों से की जाती है।

(3) स्थानीय स्रोतों द्वारा सम्वाददाताओं से सूचना प्राप्त करना

Scanned by CamScanner